International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 228-230

भूमण्डलीकरण के दौर में महिला सशक्तिकरण

डॉ० नरेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), एनीबिसेण्ट गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सलारपुर, कोटकासिम, तिजारा, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

वे पुरूष है, भगवान नही
हम स्त्री हैं, सामान नहीं

मानव को धरती पर माँ के रूप में नारी की गोद में संरक्षण मिला। नारी ने पुरुष के साथ मिलकर गृहस्थी को चलाया वह कभी दासी बनी तो कभी उसे पुरूष द्वारा पैरों की जूती समझा गया। उसे पग –पग पर अपमानित किया गया। स्वार्थी समाज ने शोषण का शिकार बनाया। पुरूष और महिला को प्रकृति ने एक समान बनाया था परन्तु पुरूष इस समाज में अपने आप को उत्कृष्ट मानने लगा। पुरूषों की यह मानसिकता आदिम समाज में भी थी और आज के अत्याधुनिक समाज में भी पुरूष वर्ग की यही मानसिकता व्याप्त है। पुरूषवादी मानसिकता का तात्पर्य ऐसी मानसिकता को हीन समझती है और पुरूष वर्ग को श्रेष्ठ। यह पुरूषवादी मानसिकता का परिणाम ही है कि महिलाएँ धरों में पिटती हैं, कार्यस्थल पर उत्पीडन का शिकार होती है। आज समाज में चारों ओर महिलाओं के खिलाफ हिंसा में तेजी आई है। हर प्रकार के महिला अपराधों का ग्राफ तेजी से ऊपर चढता जा रहा हैं। किसी भी समाज का विकास वहॉ की नारी की स्थिती पर निर्भर करता हैं। यदि समाज में नारी की स्थिति सुदृढ एवं सम्मानजनक है तो निः संदेह वह समाज मजबूत होगा और देश भी समृद्व होगा। आज नारी ने समाज को यह दिखा दिया है कि वह न केवल पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है वरन् अपनी समस्त प्राकृतिक सहजता, कोमल भावनाओं और ममतामयी छवि के साथ शौर्य,पराक्रम एवं साहस से दुनिया के नये आयाम छूने की क्षमता भी रखती है। नारी सशक्तिकरण तभी संभव हो सकता है जब महिलाओं को सम्मान देते हुए उन्हें शैक्षिक, बौद्धिक, मानसिक, आर्थिक और वैचारिक संपन्नता देने की पहल करें सहयोग दें और नागरिकता के सभी अधिकार उन्हें वास्तव में मिलें जो पुरूष को प्राप्त है। नारी सशक्तिकरण के लिए देश की हर नारी के आँखों का आँसू पोंछना होगा। हर नारी को ऊपर उठाना होगा। किसी भी समाज के विकास का सबसे पहला पायदान बेहतर शिक्षा स्तर को माना जाता है। शिक्षा के बिना न तो विकास संभव है और न ही सशक्तिकरण। सशक्तिकरण तथा विकास दोनो एक दूसरे के पूरक है। महिलाओं के आर्थिक विकास से उनका हर प्रकार का विकास संभव है। शिक्षा भी सशिक्तकरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में सबसे बढा रोडा महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता की कमी है। यदि महिलाओं को शिक्षित बना दिया जाएं तो वे अपने सामाजिक और राजनैतिक अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाएँगी और फिर जागरूक महिलाओं को दबाना संभव नही होगा। शहरी महिलाएँ शिक्षा के प्रति संवेदनशील हुई है और वे रोजगार एवं आर्थिक स्वालंबन की ओर उन्मुख है। ग्रामीण महिलाएँ इस दिशा में पिछडी हुई है। लेकिन सरकारी प्रयासों और संवैधानिक अधिकारों के द्वारा उन्हें विकास की मुख्य धारा में शामिल करने का काम किया जा रहा है। सरकार द्वारा बनाई गई विकास योजनाओं की भाँति यदि नारी सशक्तिकरण के सभी कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में सफल हो जाएं तो देश की अधिकांश महिलाएं स्वयं सशक्त होकर पुरूष के स्वार्थपरक दृष्टिकोण को बदलते हुए स्वयं आगे बढने में समर्थ हो जाएँगी।

वर्तमान युग में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक आयामों में आधुनिकता का अनुमोदन होने के साथ ही तीव्र सामाजिक परिवर्तन भी हुआ है। भारत जैसे विकासशील देश की विकास यात्रा के वृत्तांत में इस समाज में जहाँ तक पितृसत्तात्मक व्यवस्था को आज भी स्वीकारते हैं, वहीं दूसरी ओर मानवाधिकार के मुद्दे की सामाजिक प्रस्थिति में ऊर्ध्वाधर बदलाव, उसकी प्रगति व सशक्तिकरण की पुरजोर कामना भी करते हैं। यह एक विरोधाभास ही है कि आजादी के इतने वर्षो उपरान्त भी हमें एक सामाजिक मुद्दे को नैतिकता की कसौटी पर आज तक साबित करना पड़ रहा है। किसी भी समाज के सशक्त संरचना के केन्द्र में महिलाओं का वर्चस्व व अस्तित्व कायम रहना नितांत आवश्यक भी है। उनका सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों मे योगदान स्मरणीय रहा है। रथ रूपी समाज को संतुलित व निरन्तर प्रकार्यशील होने के लिए उसके दोनों लैंगिक आधारों का समानान्तरण रूप से क्रियान्वित होना बहुत महत्वपूर्ण है। किसी एक के भी अभाव में समाज विकसित नहीं हो पाएगा। सशक्तिकरण शब्द का अर्थ है सशक्त होना, शक्ति से परिपूर्ण होना, सुदृढ़, सुसंगठित व साहसी तौर पर क्रियाशील होना। आज के युग की महिला निर्बलता के परिवेश से निकलकर सशक्त महिला के रूप में प्रतिबिंबित होती है व होने की कामना करती है। महिलाओं का सशक्तिकरण कोई घटना नहीं बल्कि यह वह व्यक्तित्व विकास है जो महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक प्रस्थिति का निर्माण करता है। जब देश की अधिकांश महिलाएं स्वयं को सशक्त महसूस करेंगी तभी वह देश निर्माण में अपना सर्वस्व योगदान दे पायेगी। जिन देशों में महिलाएँ निशक्त है वहाँ वे अपने अधिकारों से वंचित है वह राष्ट्र उन्नतिशील कदापि नहीं हो सकता। सशक्तिकरण का सरल व सुस्पष्ट अर्थ है कि जब व्यक्ति को अपनी शक्ति का निराकरण हो। महिला वर्ग को सशक्त करने हेतु अथक प्रयास किये जा रहे है। उनको सामाजिक व आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए विभिन्न रोजगारपरक सुविधायें व अवसर मुहैया कराये जा रहे हैं। साथ ही उनको शिक्षा के स्तर पर ही प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। महिला वर्ग का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि परिप्रेक्ष्य पर सशक्त व सुदृढ़ होना किसी राष्ट्र के विकास पथ की अनिवार्य प्राथमिकता है। महिला सशक्तिकरण की छवि निर्माण में पुरूषवादी मानसिकता को सबसे अहम बाधक माना जाता है और यह काफी हद तक वास्तविक सच्चाई भी है। हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में पुरूषों को महिलाओं के मुकाबले ज्यादा प्राथमिकता व जीवन अवसर प्राप्त होते हैं। इसी दोयम दर्जे के कारण ही महिलाओं की स्थिति आज के समय में दयनीय, व चिंतनीय है।

विश्व के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में बहुत तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है, परन्तु इस परिवर्तनशील परिवेश में महिलाओं की स्थिति में उतनी गति से सुधार नहीं हुआ। प्रत्येक समाज में स्त्रियों और पुरूषों की सामाजिक स्थिति का आंकलन उनके आदर्शो और कार्यो के अनुसार होता है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने स्त्री के अस्तित्व को एक द्वन्द्वात्मक आयाम प्रदान किया है। एक ओर जहाँ औद्योगिक विकास के लिए स्त्री को सस्ते श्रम के रूप में इस्तेमाल किया गया है, वहीं दूसरी ओर कारपोरेट जगत में विज्ञापन के माध्यम से स्त्री को उत्पाद बेचने के लिए उसका भोगपरक और परंपरावादी दृष्टिकोण बाजार ने अपनाया है जिसके फलस्वरूप बाजारीकरण के प्रभाव में स्त्री को ऐसी स्वतंत्रता भेंट की गयी जिसकी कीमत उसे चुकानी पड़ी और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शोषण, भोगवादी छवि तथा अस्वैच्छिक कार्यो का निष्पादन करना पड़ा। व्यवहारिक जीवन में हर पुरूष के दिमाग में हमेशा महिलाओं के प्रति भोग्या वाली सोच हावी रहती है और इस सोच से पुरूष वर्ग की यह दशा है कि ज्यादातर पुरूष महिला की ओर बुभूक्षित नजरों से देखते हैं। महिला कार्यकर्त्ताओं और विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि नव उदारवादी ढांचों ने राष्ट्रों के बीच लोगों के बीच, और पुरूषों और स्त्रियों के बीच असमानता की खाई को काफी चौड़ा कर दिया है। नव उदार नीतियों ने विश्व की बहुसंख्यक महिलाओं के आर्थिक स्तर को बड़ी सफलता के साथ नष्ट करके उनके अधीनीकरण को ही मजबूत किया है। भूमंडलीकरण की इस नीति में स्त्रियों का शोषण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में हो रहा है।

वर्तमान समय में नारी की वास्तविक स्थिति सामाजिक दृष्टि से अत्यंत सोचनीय एवं दयनीय है ऐसा क्यों ? आज के युग में समाज पहले की अपेक्षा अधिक आधुनिक होने का दावा कर रहा है, पहले की अपेक्षा अधिक जन चेतना एवं जागरण का प्रचार प्रसार पत्र पत्रिकाओं एवं मीडिया के द्वारा हो रहा है। फिर भी यह कटु सत्य है कि तथाकथित मानव समाज में अनपढ़ समाज की तुलना में नारी का शोषण अधिक हो रहा है क्यों ? विख्यात दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इस विडम्बना पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि –''मनुष्य ने आकाश में उड़ना सीख लिया है, वह समुद्र की गहराई में तैरने भी लगा है लेकिन अभी धरती पर ठीक से चलना नहीं सीख पाया है।''

आजादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं के विरूद्ध हो रहे जघन्य अपराध व शोषण कम होने के स्थान पर लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। यह न केवल कुत्सित मानसिकता का परिचायक है बल्कि इसके साथ यह स्पष्ट हो जाता है कि महिला का तात्पर्य सिर्फ देह की भूख मिटाने भर से है। गौरतलब तथ्य यह भी है कि पिछले बीस वर्षो मं भारतीय महिलाओं ने अपनी स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं यदि उन्नति के पथ पर अग्रसर हुई हैं तो दूसरी ओर एक भयावह तस्वीर भी उजागर होती है जो उनकी प्रति हो रहे अन्याय, शोषण, अत्याचार, यौनाचार, उत्पीड़न एवं भेदभाव को दर्शाती है। महिला चाहे ग्रामीण अंचल की हो या शहरी कहीं न कहीं किसी प्रकार के शोषण से अवश्य पीड़ित है। इसका मूल कारण पुरूष प्रधान समाज है। पुरूष महिला विरोधी मानसिकता, सामाजिक व्यवस्था, अर्थतंत्र, धार्मिक व्यवस्था, सांस्कृतिक तंत्र, प्रशासन एवं राजनीतिक व्यवस्था पर वर्चस्व स्थापित किए हुये हैं, और इसी मानसिकता के कारण स्त्रियाँ युगों–युगों से शोषित होती चली आ रही है। समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं को पुरूषों के समान भागीदारी की बात तो जोर शोर से की जाती है लेकिन इस प्रकार के आदर्श की बातें सार्वजनिक मंचों और गोष्ठियों में वाहवाही लूटने तक ही सीमित है। विश्व के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाने के बाद भी नारी का भारतीय समाज में निम्न स्थान बने रहना एक दुःखद विडम्बना है। आर्थिक विषमता के परिणामस्वरूप स्त्री पुरूष के मध्य अंतर उत्पन्न होता है और महिलाओं की स्थिति अधीनस्थ हो जाती है। भूमि के स्वामित्व, उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण तथा निर्णय लेने की शक्ति पुरूषों के हाथों में होने के कारण पुरूष शासक एवं महिला शोषित वर्ग की छवि प्रदर्शित करती है। दिन प्रतिदिन महिलाओं के विरूद्ध हिंसा एवं अत्याचार की घटनाऐं सामाजिक स्थिरता को आघात पहुँचा रही है। यह अत्याचार व हिंसा ग्रामीण व शहरी, शिक्षित एवं अधेड़ सभी वर्गो में बढ़ रही है। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर एक प्रासंगिक प्रश्न यह उठता है कि आखिर क्यों और कब तक स्त्री के अस्तित्व को आघात पहुँचता रहेगा तथा इसके दुष्परिणाम उसे झेलने पड़ेंगे। भूमंडलीकरण के दौर में आज भी पुरूष पुरानी परम्परागत मान्यताओं के गुलाम हैं और स्त्री इन गुलामों की गुलाम है। अभी तक हमारे 'समाज' की महिलाओं क प्रति सोच रही है कि महिलाएँ वह मनोवैज्ञानिक रूप से रूग्ण नहीं है, उन्हों ने कभी अपनी रूग्णता को पहचानने का साहस नहीं किया है और उपचार का पहला कदम है 'अपनी रूगण्ता को पहचानना'।

आज के दौर में जरूरत है कि– स्त्री चेतना के माध्यम से शोषण तथा अत्याचार के खिलाफ एक जंग का आगाज किया जाए और पुरूष–स्त्री के बीच समानता और बराबरी के हक का निष्पादन किया जाए। यह भी एक कठोर सत्य है कि केवल कानूनों के निर्माण से महिलाओं को घर में सुरक्षा एवं शांति प्राप्त नहीं होगी अपितु स्त्रियों के सन्दर्भ में पुरूषों को अपनी मानसिकता बदलनी होगी तथा स्त्रियों के प्रति सम्मान व आदर का भाव जागृत करना होगा, तभी हम एक प्रगतिशील व नैतिक–मूल्यों से ओत–प्रोत समृद्धशाली देश के निर्माण की कामना कर सकते हैं। जब तक व्यक्ति के सोच में मूलभूत परिवर्तन नहीं आता तब तक नारी उत्पीड़न एवं शोषण से मुक्ति नहीं हो पा सकती। चाहे फिर उसके लिए कितने भी आयोग गठित किए जाएँ। संगोष्ठियाँ हो, परिचर्चाएँ हो। हमारी संस्कृति में नारी सर्वत्र देवी के रूप में पुज्य रही है किन्तु वास्तविक धरातल में प्रत्येक युग में नारी पुरूष वर्चस्व व क्रूर जघन्य शक्तिपात से पीड़ित रही है। विश्व का ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ महिला अपराध व उत्पीड़न न भोग रही हो। आज आवश्यक यह है कि समाज को इस भयावह स्थिति से किस प्रकार पापमुक्त किया जाये व किस प्रकार पुरूष तथा महिलाएँ एक दूसरे के प्रति अपन–अपने कर्त्तव्यों के पालन में जागरूक व सक्रिय रहें।

मूल बात है कि मानसिकता की जिसमें प्रत्येक देश की हावी पुरूषवादी मानसिकता अपने चरित्र को भूमंडलीकरण और बाजार के माध्यम से प्रकट कर रही है, जिससे कई कुप्रभाव समाज में फैल रहे हैं। स्त्री के प्रति अपनाए जाने वाले वस्तुपरक विज्ञापन, पत्रिकाओं आदि के माध्यम से जिस प्रकार से प्रसारित किये जा रहे है, उनका सबसे ज्यादा कुप्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है जो उनके दिमाग की संरचना में कहीं न कहीं स्त्री के प्रति वस्तुपरकता की छाप छोड़ रहा है। यह प्रभाव उन्हें बचपन से ही पुरूषवादी मानसिकता का शिकार, घरेलू संस्कारों के अलावा और भी ज्यादा पुरूष बना सकता है।

हजारों वर्षो से पुरूषवादी मानसिकता के अधीन स्त्री जाति उन्हीं पुरूषवादी अवधारणाओं और संस्कृति की संवाहिका बन जाती है, जिसका फायदा बाजार उठाता है। ''द सेकेंड सेक्स'' की लेखिका सीमोन द बोउवार ने कहा है कि–''स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है।'' भूमंडलीकरण में स्त्री बनाने की प्रक्रिया तेज हुई है। लेकिन इस प्रक्रिया ने अनजाने में स्त्री कृत एक द्वन्द्वात्मक स्थिति पैदा कर दी है। महिलाओं की स्थिति में सुधार तभी आ सकता है जब पुरूष अपनी मानसिकता में बदलाव लाएं। इस

उद्देश्य के लिए महिलाओं में शिक्षा के प्रयार की बहुत आवश्यकता है। एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी आर्थिक रूप से परावलम्बी नारी की अपेक्षा बेहतर स्थिति में हो सकती है। यह निश्चय ही एक कटु सत्य है कि बदलते परिवेश के साथ पुरूषों की मानसिकता में सार्थक बदलाव सब जगह नहीं आया है। घर के कामकाज में पुरूष की भागीदारी बराबर की होनी चाहिए जो नहीं है। पितष्सत्ता समाज में सारे मजबूत मुकामों पर पुरूषों का ही राज है। जिसमें स्थान बनाने के लिए महिला आरक्षण का अधिकार और विस्तृत होना चाहिए। जिसके फलस्वरूप पुरूषवादी दृष्टिकोण को न चाहते हुए भी स़्त्री को जगह देनी पडे। व्यवस्था के विभिन्न मुकामों पर जगह मिलने से स्त्री की ताकत मे विस्तार होगा व सशक्त बनकर उभरेगी। भूमंडलीकरण के पटल पर स्त्री आभा को एक नया आयाम मिलेगा। महिलाओं को भी अपनी स्थिति में सुधार करने के लिए कदम उठाने होगें जैसे कि वह अपनी क्षमता का बोध करें, स्वाभिमान को जागृत करें, युगीन समस्याओं को समझे, समस्याओं को समाज के समक्ष रखें, उन्हें दूर करने के लिए सामूहिक आवाज उठाएं और आगे बढने के लिए स्वयं अपना रास्ता बनाएं। आज जरूरत है एक नई सामाजिक संरचना की, नई जीवन शैली की, जन चेतना के विकास की,स्वस्थ एवं वैज्ञानिक सोच एवं जागरूकता की, सांस्कृतिक पुनः सष्जन की जो समाज के सदस्यों के मध्य भावनात्मक बंधन को मजबूत बनाएं।

वर्तमान समाज मे नारी के प्रति परंपरागत सोच बदलना होगा। कुछ महिलाओं के शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, उद्योग,प्रशासन और समाज सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़कर प्रतिष्ठा, आर्थिक निर्भरता या ख्याति प्राप्त कर लेने मात्र से ही संपूर्ण नारी जगत का हित, सशक्तीकरण की दिशा में प्रगति करना या उसके उत्थान के द्वारा उन्मुक्त होना संभव नहीं है। नारी को उसकी शक्ति और क्षमताओं का अहसास कराने के लिए व महिलाओं को वास्तविक रूप से सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है कि आबादी पर सख्ती से नियन्त्रण लगे ताकि सभी की मूलभूत आवश्यकताऐं पूर्ण हो सकें।

अंत में हम इसी घारणा के साथ आशान्वित होने की कामना करते है कि आगे समयाकाल में महिलाओं की स्थिति वर्तमान समय की अपेक्षा सशक्त, सुदृढ, व गौरवपूर्ण बनें। प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक सुनीता विलियम्स, दिवंगत मदर टेरेसा, महिला खिलाडी मैरी कौम, पूर्व महिला आई पी एस अधिकारी किरण बेदी, महिला उद्यमी किरण मजमूदार आदि ऐसी कई प्रभावशाली व प्रख्यात हस्तियॉ हैं। जिन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण की तस्वीर को एक ऊॅचा मुकाम हासिल करवाया। हमें इन सभी महिलाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए कि महिला वर्ग निशक्त, उत्पीडित, निर्बल व कमजोर नहीं हे बल्कि अपनी शक्तियों, आत्मविश्वास और क्षमताओं के बल पर अग्रणीय होने में सक्षम है।

संदर्भ

1. गौतम, रमेश (2003): फ्रमानव अधिकारः विविध आयाम, विश्वविधालय प्रकाशन, सागर।
2. रावत, ज्ञानेन्द्र (2006): फ्र औरतः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
3. सिंह मीनाक्षी निशांतः (2006) महिला सशक्तीकरण का सच, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. भास्कर, कुमार (2008): ''भूमंडलीकरण और स्त्री'', संजय प्रकाशन, दिल्ली।
5. कारात, बृंदा (2008): ''भारतीय नारी संधर्ष और मुक्ति'', ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली।
6. शर्मा, मंजू (2008): ''नारी शोषण एवं मानवाधिकार'', राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।
7. शर्मा ऋषभ देव : स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम।
8. Ganesamurthy VS. Empowerment of women in Indian: Social Economic and Political, New Centure Publications. 2008.
9. Graham Erin Murphy. Opening Minds, Improving lives: Education and Women's Empowerment in Honduras, Vanderbilt Univrsity Press, U.S. 2012.
10. Hall Margarest C. Women and Empowerment: Strategies for Increasing Autonomy, Routledge Publication. 2013.
11. Tarique. Education and women Empowerment in India: A comparative Analysis, Grim Yerlog, Germany. 2013.